1. मुद्रा की प्रकृति और परिभाषा
(NATURE AND DEFINITION OF MONEY)

मुद्रा के अर्थ और प्रकृति के सम्बन्ध में बहुत मतभेद और भ्रान्ति चली आ रही है। जैसा कि **स्कितोव्स्की** ने लक्ष्य किया है, "मुद्रा की धारणा को परिभाषित करना कठिन है, आंशिक रूप से तो इसलिए कि यह एक नहीं तीन कार्य करती है, जिनमें से प्रत्येक कार्य मुद्रात्व की कसौटी प्रदान करता है। ये कार्य हैं: (i) लेखा की इकाई, (ii) विनिमय का माध्यम, और (iii) मूल्य का संचय।"[1] यद्यपि स्कितोव्स्की ने मुद्रात्व (moneyness)[2] के कारण मुद्रा को परिभाषित करने की कठिनाई की ओर संकेत किया है तथापि उसने मुद्रा की व्यापक परिभाषा दी है। प्रो. **कोलबोर्न** (Coulborn) की परिभाषा के अनुसार मुद्रा मूल्यांकन तथा भुगतान का माध्यम है; लेखा की इकाई के रूप में भी तथा विनिमय के सामान्यत: स्वीकार्य माध्यम के रूप में भी।" (Money is the means of valuation and of payment; as both the unit of account and the generally acceptable medium of exchange). कोलबोर्न की परिभाषा बहुत व्यापक है। उसने इस परिभाषा में 'मूर्त' मुद्रा (concrete money) जैसे—सोना, चैक, सिक्के, करेन्सी, नोट, बैंक ड्राफ्ट आदि को तो शामिल किया ही है, साथ ही अमूर्त मुद्रा (abstract money) को भी ले लिया है जो हमारे मूल्य, कीमत तथा योग्यता के विचारों की वाहिका है। इस तरह की व्यापक परिभाषाएं देखकर **सर जॉन हिक्स** ने कहा था, "मुद्रा अपने कार्यों से परिभाषित होती है, जिस किसी वस्तु को मुद्रा की भांति प्रयोग किया जाए वही मुद्रा बन जाती है। मुद्रा वही है जो मुद्रा का काम करे।" (Money is defined by its functions: anything is money which is used as money; 'money is what money does')[3] ये मुद्रा की कार्यात्मक परिभाषाएं हैं क्योंकि ये मुद्रा को उसके कार्यों की दृष्टि से परिभाषित करती हैं।

कुछ अर्थशास्त्री मुद्रा को कानून की शब्दावली में परिभाषित करते हैं और कहते हैं, "जिस किसी चीज को सरकार मुद्रा घोषित कर दे, वही मुद्रा है।" इस तरह की मुद्रा को सामान्यरूप से सभी स्वीकार करते हैं और इसमें ऋण चुकाने की कानूनी शक्ति होती है। परन्तु हो सकता है कि लोग वैध मुद्रा स्वीकार न करें और उसके बदले में वस्तुएं तथा सेवाएं बेचने को तैयार न हों। दूसरी ओर संभव है कि

---

1. T. Scitovsky, *Money and the Balance of Payments*, 1969.
2. मुद्रात्व का अर्थ है तरलता। जिन वस्तुओं में तरलता होती है उन सबमें मुद्रात्व होती है।
3. John Hicks, *Critical Essays in Monetary Theory*, 1967.

Scanned with CamScanner

लोग ऐसी चीजों को मुद्रा के रूप में स्वीकार कर लें जिन्हें ऋण चुकाने के लिए कानूनी तौर पर मुद्रा नहीं कहा गया, परन्तु जो खूब प्रचलित हों। इस तरह की चीजें, कमर्शियल बैंकों द्वारा जारी किए गए चैक और नोट हैं। इस प्रकार, वैधता के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी बातें हैं जो कुछ चीजों को मुद्रा बनाती हैं।

2. मुद्रा की सैद्धांतिक और अनुभवसिद्ध परिभाषाएं
(THEORETICAL AND EMPIRICAL DEFINITIONS OF MONEY)

मुद्रा की परिभाषा के बारे में अर्थशास्त्री एकमत नहीं हैं, इसलिए प्रो. जॉनसन[1] इस संबंध में चार मुख्य विचारधाराओं का उल्लेख करता है जिनकी पेसक और सेविंग के विचार के साथ नीचे विवेचना की गई है।

1. **परंपरागत परिभाषा** (Traditional Definition of Money)—परंपरागत विचारधारा, जिसे करेंसी संप्रदाय भी कहते हैं, के अनुसार, मुद्रा को करेंसी और मांग जमा कहा गया है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय के माध्यम के रूप में है। केन्ज़ ने परंपरागत विचारधारा का पालन करते हुए अपनी पुस्तक General Theory में नकदी और बैंकों की मांग जमा को मुद्रा परिभाषित किया। हिक्स ने अपने Critical Essays in Monetary Theory में मुद्रा की प्रकृति के परंपरागत तिहरे वर्गीकरण को बताया है: "लेखा की इकाई, भुगतान करने का साधन और मूल्य के संचय के रूप में।" बैंकिंग संप्रदाय ने मुद्रा की परंपरागत परिभाषा को मनमानी कहकर इसकी आलोचना की। इसमें मुद्रा का अर्थ बहुत संकुचित है क्योंकि अन्य परिसंपत्तियां भी हैं जो समानरूप से विनिमय का माध्यम स्वीकार की जाती हैं। इनमें कमर्शियल बैंकों के समय जमा-पत्र, विनिमय बिल, आदि शामिल हैं। इन परिसंपत्तियों की उपेक्षा करके परंपरागत विचारधारा उनके प्रभाव से उनके वेग (velocity) का विश्लेषण करने में समर्थ नहीं है। फिर, इनको मुद्रा की परिभाषा से निकालकर, केन्ज़वादी मुद्रा के ब्याज-लोच मांग फलन पर अधिक बल देते हैं। अनुभवसिद्ध तौर से उन्होंने ब्याज दर द्वारा उत्पादन और मुद्रा के स्टॉक के बीच संबंध स्थापित किया।

2. **फ्रीडमैन की परिभाषा** (Friedman's Definition of Money)—मुद्रा से फ्रीडमैन का अभिप्राय है, "अक्षरश: वे सभी डालर जो लोग अपनी जेबों में लिए घूमते हैं, और वे सभी डालर जो मांग जमा और वाणिज्यिक बैंक के पास समय जमा के रूप में उनके बैंक खातों में हैं।" अत: उसकी परिभाषा के अनुसार, मुद्रा "करेंसी और कमर्शियल बैंकों की कुल समायोजित जमाओं का जोड़ है।" (the sum of currency plus all adjusted deposits in commercial banks).[1] यह मुद्रा की व्यावहारिक परिभाषा है, जिसका फ्रीडमैन और शर्वाटज़ चुने हुए 1929, 1935, 1950, 1955 और 1960 वर्षों के लिए अमरीका की मौद्रिक प्रवृत्तियों के अनुभवसिद्ध अध्ययन के लिए प्रयोग करते हैं। यह मुद्रा की संकुचित परिभाषा थी और कमर्शियल बैंकों के दोनों मांग और समय-जमाओं में समायोजन (adjustment) तथा समाज और कमर्शियल बैंकों की बढ़ रही वित्तीय कृत्रिमता को ध्यान में रख कर रची गई थी। परन्तु फ्रीडमैन इस कृत्रिमता का एक सूचक भी स्थापित नहीं कर सका। इस समायोजन के साथ भी, नकद और जमा मुद्राओं की दीर्घकाल तक पूरी तरह से तुलना (comparison) नहीं की जा सकी थी। फिर भी, 1950, 1955 और 1960 के लिए सहसंबंध प्रमाण (correlation evidence) ने मुद्रा की इस विस्तृत परिभाषा का सुझाव दिया: "कोई परिसंपत्ति जो क्रय शक्ति के

1. H.G. Johnson, *"Monetary Theory and Policy,"* A.E.R., June, 1962

Scanned with CamScanner